ग़ौसे पाक की इबादत व रियाज़त

Ghaus e Pak Ki Ebadat o Riyazat (Hindi)

Haftawar Sunnaton Bhara Bayan

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

क़बूलिय्यते दुआ का परवाना

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (मस्जिद में) तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी आया, उस ने नमाज़ पढ़ी और फिर इन कलिमात से दुआ मांगी : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे और मुझ पर रह्म फ़रमा। ''रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : عَجِلْتَ اَیُّهَا الْمُصَلِّیْ ऐ नमाज़ी तू ने जल्दी की।

اِذَا صَلَّيْتَ فَقَعَدْتَ فَاحْمِدِ اللّٰهَ بِمَا هُوَ اَهْلُهٗ، وَصَلِّ عَلَیَّ ثُمَّ ادْعُهُ

जब तू नमाज़ पढ़ कर बैठे तो (पहले) अल्लाह तआ़ला की ऐसी ह़म्द कर जो उस के लाइक़ है और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़, फिर इस के बा'द दुआ़ मांग।''

रावी का बयान है कि इस के बा'द एक और शख़्स ने नमाज़ पढ़ी, फिर (फ़ारिग़ हो कर) अल्लाह तआ़ला की ह़म्द बयान की और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ा तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَیُّهَا الْمُصَلِّیْ اُدْعُ تُجَبْ ऐ नमाज़ी ! तू दुआ़ मांग, क़बूल की जाएगी।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی جامع الدعوات۔۔۔۔۔۔الخ، ۵/ ۲۹۰، حدیث: ۳۴۸۷)

बयान कर्दा रिवायत से मा'लूम हुवा कि अगर दुआ़ मांगने वाला क़बूलिय्यत का त़ालिब है तो इस पर लाज़िम व ज़रूरी है कि दुआ़ के अव्वल व आख़िर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم पर दुरूदे पाक पढ़ा करे।

बचें बेकार बातों से, पढ़ें ऐ काश कसरत से
तेरे महबूब पर हर दम दुरूदे पाक हम, मौला

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं । फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرَانِي ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा ۞ देख कर बयान करूंगा ۞ पारह **14** सूरतुन्नह़ल, आयत **125 :**

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस **4361**)

में वारिद इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰیَۃً या'नी **''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो''** में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज मैं आप के सामने **''ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म जीलानी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی **की इबादत व रियाज़त''** के ह़वाले से मदनी फूल पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगा।

सब से पहले मैं ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़िय्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की इबादत पर इस्तिक़ामत का एक वाक़िआ़, आप के गोश गुज़ार करूंगा, इस के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नाम, अल्क़ाब, वालिदैन और आप के हुल्ये के बारे में मुख़्तसरन अ़र्ज़ करने के बा'द इराक़ के बयाबानों में आप के पन्दरह साला मुजाहदे और रियाज़त का अह़वाल भी बयान करूंगा। इस के बा'द रात को कसरत से इबादत और शयातीन से मुक़ाबले का अह़वाल बयान करने के साथ साथ येह भी अ़र्ज़ करूंगा कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن को इबादत में इतना ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ कैसे ह़ासिल होता था ? इस के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ख़ौफ़े ख़ुदा और आख़िर में सलाम से मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल भी पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

बड़ी बड़ी आंखों वाला आदमी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **''सांप नुमा जिन्न''** से सांप नुमा जिन्न की एक ख़ौफ़नाक हिकायत सुनिये और ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इस्तिक़ामत पर अ़क़ीदत से सर धुनिये चुनान्चे, हुज़ूर शहनशाहे बग़्दाद सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं जामेए मन्सूर में मसरूफ़े नमाज़ था कि सांप आ गया और उस ने मेरे सजदे की जगह पर सर रख कर मुंह खोल दिया। मैं ने उसे हटा कर सजदा किया मगर वोह मेरी गर्दन से लिपट गया फिर वोह मेरी एक आस्तीन में घुस कर दूसरी आस्तीन से निकला, नमाज़ मुकम्मल करने के बा'द जब मैं ने सलाम फेरा तो वोह ग़ाइब हो गया। दूसरे रोज़ जब मैं फिर उसी मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मुझे एक बड़ी बड़ी आंखों वाला आदमी नज़र आया। मैं ने उसे देख कर अन्दाज़ा लगा लिया कि येह शख़्स इन्सान नहीं बल्कि कोई जिन्न है। वोह जिन्न मुझ से कहने लगा कि ''मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को तंग करने वाला वोही सांप हूं। मैं ने सांप के रूप में बहुत सारे औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى को आज़माया है मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जैसा किसी को भी साबित क़दम नहीं पाया।'' फिर वोह जिन्न आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दस्ते हक़ परस्त पर ताइब हो गया। (بَهجة الأسرار، ص ١٦٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुवे देख कर तुझ को, काफ़िर मुसलमां
बने संगदिल मोम सां ग़ौसे आ'ज़म

(क़बालए बख़्शिश)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ हो तो ऐसा हो कि नमाज़ में ख़्वाह सांप ही लिपट जाए मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से तवज्जोह न हटे । आह ! एक हमारी नमाज़ है कि अगर हम पर मख्खी भी बैठ जाए तो परेशान हो जाएं, मा'मूली ख़ारिश भी हम से बरदाश्त न हो सके । इस वाक़िए़ से येह भी मा'लूम हुवा कि जिन्नात भी हमारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के मुरीद बन जाते हैं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आइये हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़िन्दगी के चन्द गोशों के बारे में समाअ़त करते हैं ।

ग़ौसे आ'ज़म के अल्क़ाब और आप के वालिदैन के नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی की विलादते बा सआ़दत यकुम रमज़ान सि. **470** हि. जुमुअ़तुल मुबारक को जीलान में हुई । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कुन्यत अबू मुह़म्मद है और मुह़िय्युद्दीन, मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसे आ'ज़म, ग़ौसे सक़लैन वग़ैरा आप के अल्क़ाबात हैं । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे बुज़ुर्गवार का नाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त और वालिदए मुह़तरमा का नाम उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا है, आप वालिद की त़रफ़ से ह़सनी और वालिदए माजिदा की त़रफ़ से हुसैनी सय्यिद हैं ।

तू हुसैनी ह़सनी क्यूं न मुह़िय्युद्दीं हो
ऐ ख़िज़्र मजमए़ बह़रैन है चश्मा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. **19**)

www.dawateislami.net

हुल्या मुबारक

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले **''ग़ौसे पाक के ह़ालात''** में है :

आप के हुल्एए मुबारक के बारे में ह़ज़रते शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन क़दामा मक़दसी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हमारे इमाम शैख़ुल इस्लाम मुह़िय्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़बे रब्बानी, ग़ौसे समदानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़ईफ़ुल बदन, मियाना क़द, फ़राख़ सीना, चौड़ी दाढ़ी और दराज़ गर्दन, रंग गन्दुमी, मिले हुवे अब्रू, सियाह आंखें, बुलन्द आवाज़ और वाफ़िरे इ़ल्मो फ़ज़्ल थे। (بہجۃ الاسرار، ذکر نسبہ وصفتہ ص ۱۷۴)

मेरी क़िस्मत का चमका दो सितारा या शहे बग़दाद
दिखा दो अपना चेहरा प्यारा प्यारा या शहे बग़दाद
करम मीरां मेरे उजड़े गुलिस्तां में बहार आए
ख़ज़ां का रुख़ फिरा दो अब ख़ुदारा या शहे बग़दाद

(वसाइले बख़्शिश, स. **542, 543**)

चालीस साल तक इ़शा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अ़दा फ़रमाई

शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अबुल फ़त्ह़ हरवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''मैं ने ह़ज़रते शैख़ मुह़िय्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़बे रब्बानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की चालीस साल तक ख़िदमत की, इस मुद्दत में आप इ़शा के वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ते थे और आप का मा'मूल था कि जब बे वुज़ू होते थे तो उसी वक़्त वुज़ू फ़रमा कर दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ लेते थे।

(بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ، ص ۱۶۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि हमारे ग़ौसे पाक का मा'मूल था कि आप जब भी वुज़ू फ़रमाते तो दो रक्अ़त

www.dawateislami.net

नफ़्ल पढ़ लेते, ह़दीसे पाक में वुज़ू के बा'द दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने की फ़ज़ीलत आई है आप भी समाअ़त फ़रमा लीजिये। चुनान्चे,

एक बार हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! क्या सबब है कि मैं जन्नत में तशरीफ़ ले गया तो तुम को आगे आगे जाते देखा।" अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं जब वुज़ू करता हूं, दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ लेता हूं। फ़रमाया : येह ही सबब है !

(صحیح البخاری، کتاب التھجد، باب فضل الطھور... الخ، الحدیث ۱۱۴۹، ج۱، ص۳۹۰، ملخصاً)

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि "**तह़िय्यतुल वुज़ू**" अदा करने की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **72 मदनी इन्आ़मात** में से मदनी इन्आ़म नम्बर **20** में इस फ़ज़ीलत को पाने के लिये इरशाद फ़रमाते हैं : "क्या आज आप ने कम अज़ कम एक एक बार तह़िय्यतुल वुज़ू और तह़िय्यतुल मस्जिद अदा फ़रमाई ?"

आप भी निय्यत कर लीजिये कि जब भी वुज़ू करें अगर मकरूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नमाज़ "**तह़िय्यतुल वुज़ू**" अदा कर लें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अज्रो सवाब का ख़ज़ाना हाथ आएगा।

हो करम ! हुस्ने अ़मल आह ! नहीं है कोई
न वज़ाइफ़ हैं न अज़कार हैं ग़ौसे आ'ज़म
ह़श्र के रोज़ हमारी भी शफ़ाअ़त करना
आह ! हम सख़्त गुनहगार हैं ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. **561**)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पन्द्रह साल तक हर रात में ख़त्मे कुरआने मजीद

बहर ह़ाल हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत ज़ियादा इबादत व रियाज़त और कुरआने मजीद की तिलावत किया करते थे। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि हुज़ूर ग़ौसुस्सक़लैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पन्दरह साल तक रात भर में एक कुरआने पाक ख़त्म करते रहे। (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ... الخ، ص۱۱۸)

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ येह भी मन्क़ूल है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोज़ाना एक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल अदा फ़रमाते थे।'' (تفریح الخاطر، ص۳۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है किसी के ज़ेह्न में येह सुवाल पैदा हो कि हम तो जब भी इबादत करने लगते हैं तो कुछ ही देर में थक जाते हैं नीज़ हमारा दिल भी पूरी त़रह़ इबादत में नहीं लगता और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ ह़ासिल नहीं होता, लेकिन येह बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इतनी ज़ियादा इबादत कैसे किया करते थे और इन के दिलों में इबादत का इतना ज़ौक़ो शौक़ कैसे पैदा हो जाता था ? तो इस का जवाब येह है कि नेक बन्दों के दिल मह़ब्बते इलाही और तक़्वा से आबाद होते हैं, येह अपने दिलों से दुन्या की मह़ब्बत निकाल देते हैं, इन की रूहें ज़िक्रे इलाही के बिग़ैर बेचैन व बे क़रार रहती हैं, इस लिये येह हर लम्ह़ा यादे इलाही में मगन रहते हैं और बन्दे को येह मक़ाम इबादत व रियाज़त में सख़्त मेह़नत करने से ह़ासिल होता है। बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की सीरत का जाइज़ा लेने से पता चलता है कि वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करने और दुन्या की मह़ब्बत को दिल से निकालने के लिये बहुत सख़्तियां झेलते और रियाज़तें किया करते थे। चुनान्चे,

सर्द रात में चालीस बार ग़ुस्ल

''बह्जतुल अस्रार शरीफ़ में है कि सरकारे बग़्दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ''कर्ख़'' के जंगलों में बरसों रहा हूं, दरख़्त के पत्तों और बूटियों पर मेरा गुज़ारा होता। मुझे पहनने के लिये हर साल एक शख़्स सौफ़ (या'नी ऊन) का एक जुब्बा ला कर देता था जिस को मैं पहना करता था। मैं ने दुन्या की मह़ब्बत से नजात ह़ासिल करने के लिये हज़ार जतन किये, मैं गुमनाम रहा, मेरी ख़ामोशी के सबब लोग मुझे गूंगा, नादान और दीवाना कहते थे, मैं

www.dawateislami.net

कांटों पर नंगे पाउं चलता, ख़ौफ़नाक ग़ारों और भयानक वादियों में बे झिजक दाख़िल हो जाता। दुन्या बन संवर कर मेरे सामने ज़ाहिर होती मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं उस की तरफ़ इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) न करता। मेरा नफ़्स कभी मेरे आगे आजिज़ी करता कि आप की जो मरज़ी होगी वोही करूंगा और कभी मुझ से लड़ता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे इस पर फ़त्ह नसीब करता। मैं मुद्दतों "मदाइन" के बियाबानों में रहा और अपने नफ़्स को मुजाहदात में लगाता रहा। एक साल तक गिरी पड़ी चीज़ें खाता और बिल्कुल पानी न पिता फिर एक साल सिर्फ़ पानी पर गुज़ारा करता और गिरी पड़ी चीज़ या कोई और गिज़ा न खाता फिर एक साल बिग़ैर कुछ खाए पिये फ़ाक़े से गुज़ारता। मुझ पर सख़्त आज़माइशें आतीं। एक बार सख़्त सर्दी की रात मेरा यूं इम्तिहान लिया गया कि बार बार आंख लग जाती और मुझ पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता। मैं फ़ौरन नहर पर आता और ग़ुस्ल करता इस तरह उस एक रात में चालीस बार मैं ने ग़ुस्ल किया! (بَهجَةُ الأسرار ومعدن الأنوار، ص ١٦٥ ملخصاً)

मुसीबत दूर होने का अ़मल

हज़रते अ़ल्लामा इमाम शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی "तबक़ाते कुब्रा" में हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का येह इरशादे गिरामी नक़्ल करते हैं: इब्तिदाअन मुझ पर बहुत सख़्तियां रखी गईं और जब सख़्तियां इन्तिहा को पहुंच गईं तो मैं आजिज़ आ कर ज़मीन पर लैट गया और मेरी ज़बान पर क़ुरआने पाक की येह दो आयाते मुबारका जारी हो गईं:

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ۝ (پ٣٠، الم نشرح: ٥، ٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: *तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है, बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है।*

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन आयात की बरकत से वोह तमाम सख़्तियां मुझ से दूर हो गईं। (الطبقاتُ الکبریٰ، ج١، ص١٧٨، ملخصاً، دار الفکر بیروت)

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

www.dawateislami.net

हम भी कोशिश करें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने अपने रब्बे मुअ़ज़्ज़म عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाने और अपने नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश फ़रमाने, नफ़्सो शैत़ान पर ग़ालिब आने, दुन्या की मह़ब्बत से पीछा छुड़ाने, गुनाहों के अमराज़ से ख़ुद को बचाने, मख़्लूक़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को राहे रास्त पर लाने, मुबल्लिग़ का शरफ़ पाने, नेकी की दा'वत की दुन्या में धूम मचाने और बेशुमार कुफ़्फ़ार को दामने इस्लाम में दाख़िल फ़रमाने के लिये सालहा साल तक जिदो जह्द फ़रमाई। ख़ैर हम हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रह़ मुजाहदात तो करने से रहे मगर हिम्मत हारे बिग़ैर थोड़ी बहुत कोशिश तो जारी रखें।

सच है इन्सान को कुछ खो के मिला करता है
आप को खो के तुझे पाएगा जोया तेरा

(ज़ौक़े ना'त)

अदाएगिये क़र्ज़

ह़ज़रते शैख़ मुह़िय्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, कुत़्बे रब्बानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं एक दिन जंगल में बैठा हुवा फ़िक़्ह की किताब का मुत़ालआ़ कर रहा था कि हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई कि हुसूले इ़ल्मे फ़िक़्ह और दीगर उ़लूम की त़लब के लिये कुछ रक़म ले कर काम चला लो। आप फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा : ''तंगी की ह़ालत में किस त़रह़ क़र्ज़ ले सकता हूं जब कि मेरे पास अदाएगी की कोई सूरत नहीं ?'' तो आवाज़ आई : ''तुम क़र्जा लो, अदाएगी हमारे ज़िम्मे है।'' येह सुन कर मैं ने खाना फ़रोख़्त करने वाले से जा कर कहा कि मैं तुम से इस शर्त़ पर मुआ़मला करना चाहता हूं कि जब मुझे ख़ुदावन्दे तआ़ला सहूलत अ़त़ा फ़रमा दे तो

www.dawateislami.net

मैं तुम्हारी रक़म अदा कर दूंगा येह सुन कर उस ने रो कर कहा कि ''मेरे आक़ा ! मैं हर वोह शै पेश करने को तय्यार हूं जो आप त़लब फ़रमाएं।'' चुनान्चे, मैं उस से एक मुद्दत तक एक डेढ़ रोटी और कुछ सालन लेता रहा लेकिन मुझे येह शदीद परेशानी हर वक़्त लाहिक़ रहती कि जब मेरे अन्दर इस्तित़ाअ़त ही नहीं तो मैं येह रक़म कहां से अदा करूंगा ? इस परेशानी के आ़लम में मुझे हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई कि ''फ़ुलां मक़ाम पर चले जाओ वहां जो कुछ रैत में पड़ा हुवा मिल जाए उस को ले कर खाने वाले का क़र्ज़ अदा कर दो और अपनी ज़रूरियात की भी तक्मील करते रहो।'' चुनान्चे, जब मैं बताए हुवे मक़ाम पर पहुंचा तो वहां मुझे रैत पर पड़ा हुवा सोने का एक बहुत बड़ा टुकड़ा मिला जिस को मैं ने ले कर होटल वाले का सारा हिसाब पूरा कर दिया। (सीरते ग़ौसे आ'ज़म, स. **44**)

मसाइब तरक़्क़िये दरजात का ज़रीआ़ हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم पर किस क़दर सख़्तियां और मुसीबतें आईं, लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सब्र से काम लेते हुवे इस्तिक़ामत के साथ इबादत व रियाज़त में मश्ग़ूल रहते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ग़ैब से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया। याद रहे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर मुसीबतें नाज़िल फ़रमा कर उन की आज़माइश फ़रमाता है, अगर वोह इन पर सब्र करते हैं तो येह मुसीबतें उन के दरजात की बुलन्दी का सबब बनती हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे मुसीबत में मुब्तला फ़रमा देता है।''**(1)**

---

[1] ... بخاری، کتاب المرضی، باب ماجاء کفارۃ المرض، ۴/ ۴، حدیث: ۵۶۴۵

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब रूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मोमिन के मुआ़मले पर तअ़ज्जुब है कि उस का सारा मुआ़मला भलाई पर मुश्तमिल है और येह सिर्फ़ उसी मोमिन के लिये है जिसे ख़ुशह़ाली ह़ासिल होती है तो शुक्र करता है क्यूंकि उस के ह़क़ में येही बेहतर है और अगर तंगदस्ती पहुंचती है तो सब्र करता है तो येह भी उस के ह़क़ में बेहतर है।(1)

मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब बन्दे का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां कोई मर्तबा मुक़र्रर हो और वोह उस मर्तबे तक किसी अ़मल से न पहुंच सके तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जिस्म, माल या अवलाद की आज़माइश में मुब्तला फ़रमाता है फिर उसे इन तकालीफ़ पर सब्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां अपने मुक़र्रर दर्जे तक पहुंच जाता है।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के हर काम में हज़ारहा ह़िक्मतें पोशीदा होती हैं जो हमारी अ़क़्ल में नहीं आतीं, कभी कभार तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसीबतें नाज़िल फ़रमा कर अपने बन्दों को आज़माता भी है और जब वोह सब्र करते हैं तो उन के गुनाहों को मिटाता और दरजात को बुलन्द फ़रमाता है और बा'ज़ अवक़ात इन मसाइब व आलाम के पीछे हमारी बद आ'मालियां भी कार फ़रमा होती हैं। चुनान्चे,

मुसीबतों का सबब हमारे करतूत हैं

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : मैं तुम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

1 ... مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب المومن امرہ کلہ خیر، ص ۱۵۹۸، حدیث: ۲۹۹۹

2 ... ابو داؤد، کتاب الجنائز، باب الامراض المکفرۃ ... الخ، ۳/۲۴۶، حدیث: ۳۰۹۰

www.dawateislami.net

किताब में सब से अफ़्ज़ल आयत की ख़बर देता हूं जो हमें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बताई है :

وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۰﴾ (پ۲۵، الشوریٰ: ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह इस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

(हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमारे सामने येह आयत तिलावत करने के बा'द इरशाद फ़रमाया :) ऐ अ़ली ! मैं इस की तफ़्सीर बयान करता हूं, तुम्हें दुन्या में जो बीमारी, सज़ा या कोई बला पहुंचती है वोह इस सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से बहुत ज़ियादा करीम है कि आख़िरत में दोबारा सज़ा दे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब दुन्या में तुम से गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये तो वोह इस से बहुत ज़ियादा ह़लीम है कि मुआ़फ़ करने के बा'द सज़ा दे।[1]

जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत
शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है

आख़िरत की मुसीबत बरदाश्त न हो सकेगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक से हमें येह दर्स मिलता है कि अगर हम पर कभी कोई मुसीबत आ जाए तो बे सब्री का मुज़ाहरा करने के बजाए हम में से हर एक को येह ज़ेह्न बनाना चाहिये कि शायद मेरी बुराइयों की सज़ा आख़िरत के बजाए दुन्या ही में दे दी गई है। इस त़रह़ उम्मीद है कि सब्र आसान हो जाएगा। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मरने के बा'द मिलने वाली सज़ा के मुक़ाबले में दुन्या की सज़ा इन्तिहाई आसान है, दुन्या की मुसीबत आदमी बरदाश्त कर ही लेता है मगर आख़िरत की मुसीबत बरदाश्त करना ना मुमकिन है।

---

[1] ... مسند امام احمد، مسند علی بن ابی طالب، ۱/۱۸۵، حدیث: ۶۴۹

www.dawateislami.net

लिहाज़ा जब भी कोई आफ़त आ पड़े ख़्वाह त़वील अ़र्से तक बे रोज़गारी या बीमारी दूर न हो या मसाइल ह़ल न हों तो हिम्मत न हारिये और हर मौक़अ़ पर सब्र, सब्र और सब्र से काम लीजिये।

प्यारे मुबल्लिग़ मा'मूली सी मुश्किल पर घबराता है ?
देख हुसैन ने दीन की ख़ातिर सारा घर क़ुरबान किया !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खाना छोड़ दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नज़दीक इबादत व रियाज़त की इतनी अहम्मिय्यत थी कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه खाना भी इसी निय्यत से तनावुल फ़रमाते ताकि इस के ज़रीए इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल हो सके। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सुलमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़िय्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़बे रब्बानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي ने मुझे अपना एक वाक़िआ़ इस त़रह़ सुनाया कि जिस वक़्त मैं शहर के एक मह़ल्ले **''क़ुत़बिय्या शरक़ी''** में मुक़ीम था तो मेरे ऊपर चन्द यौम (दिन) ऐसे गुज़रे कि न तो मेरे पास खाने की कोई चीज़ थी और न कुछ ख़रीदने की इस्तित़ाअ़त, इसी ह़ालत में एक शख़्स अचानक मेरे हाथ में काग़ज़ की बन्धी हुई पुड़िया दे कर चल दिया और मैं उस के अन्दर बन्धी हुई रक़म से ह़ल्वा पराठा ख़रीद कर मस्जिद में पहुंच गया और क़िब्ला रू हो कर इस फ़िक्र में ग़र्क़ हो गया कि इस को खाऊं या न खाऊं। इसी ह़ालत में मस्जिद की दीवार में रखे हुवे काग़ज़ पर मेरी नज़र पड़ी तो मैं ने उठ कर उस को पढ़ा तो उस में येह लिखा हुवा था कि ''हम ने कमज़ोर मोअमिनीन के लिये रिज़्क़ की ख़्वाहिश पैदा की ताकि वोह बन्दगी के लिये इस के ज़रीए क़ुव्वत ह़ासिल कर सकें'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इस तह़रीर को देख कर मैं ने अपना रूमाल उठाया और खाना वहीं छोड़ कर दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर के मस्जिद से निकल आया। (सीरते ग़ौसे आ'ज़म, स. **46**)

www.dawateislami.net

इस से येह मा'लूम हुवा कि हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस वक़्त तक खाना तनावुल न फ़रमाते जब तक येह ह़ालत न हो जाती कि अब खाए बिग़ैर निढ़ाल हो जाएंगे और इ़बादत की कुव्वत बाक़ी न रहेगी इसी लिये आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी कि अभी तो इ़बादत की कुव्वत बाक़ी है और वोह खाना वहीं छोड़ दिया। पता चला कि खाना खाने का मक़्सद और निय्यत येह होनी चाहिये कि इस के ज़रीए़ इ़बादते इलाही पर कुव्वत ह़ासिल हो सके। सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی में से बा'ज़ कई कई रोज़ तक नहीं खाते थे, चुनान्चे, हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه छे दिन तक कुछ तनावुल न फ़रमाते, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सात दिन तक न खाते, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल जौज़ाअ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सात दिन भूके रहते, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰی हर तीन दिन के बा'द खाना तनावुल फ़रमाते। येह तमाम ह़ज़रात भूक के ज़रीए़ आख़िरत के रास्ते पर चलने में मदद ह़ासिल करते थे। (احیاء العلوم ج۳ص۹۸)

जब कि इस के बर अ़क्स आज हमारा ह़ाल येह है कि फ़क़त़ नफ़्स की लज़्ज़त की ख़ात़िर खाते हैं और वक़्त बे वक़्त हर क़िस्म की चीज़ें पेट में उंडेलते रहते हैं। ऐ काश ! हमारा भी भूक से कम खाने का ज़ेह्न बन जाए और हम फ़क़त इतना खाएं जिस से इ़बादते इलाही पर कुव्वत ह़ासिल हो सके। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस से दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां ह़ासिल होंगीं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की इबादत का ह़ाल

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को इबादते इलाही से इस क़दर शग़फ़ था कि मुजाहदात व रियाज़ात के बा'द जब आप ने इह़्याए दीन की जिदो जह्द का आग़ाज़ फ़रमाया तो उस वक़्त भी इबादत के ज़ौक़ो शौक़ में बिल्कुल फ़र्क़ न आया। आप हमेशा बा वुज़ू रहते, जब ह़दस लाह़िक़ होता (या'नी बे वुज़ू होते) तो उसी वक़्त ताज़ा वुज़ू फ़रमाते और दो रक्अ़त **"तह़िय्यतुल वुज़ू"** पढ़ते। शब बेदारी की येह कैफ़िय्यत थी कि चालीस साल तक इशा के वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ते रहे। पन्दरह बरस तक येह ह़ाल रहा कि इशा की नमाज़ के बा'द एक पाउं पर खड़े हो जाते और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते पढ़ते सुब्ह़ कर देते थे। अकसर एक तिहाई रात में दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करते हर रक्अ़त में **सूरतुर्रह़्मान या सूरतुल मुज़्ज़म्मिल** की तिलावत करते, अगर **सूरतुल इख़्लास** पढ़ते तो उस की ता'दाद सो बार से कम न होती, अगर ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत सोना ज़रूरी होता तो अव्वल शब में थोड़ा सा सो जाते फिर जल्द ही उठ कर इबादते इलाही में मश्ग़ूल हो जाते, ग़रज़ आप की रातें मुराक़बा, मुशाहदा और यादे इलाही में गुज़रती थीं, नींद आप से कोसों दूर रहती थी। ख़ुद फ़रमाते हैं कि मुझे दर्दे इश्क़ नींद से मानेअ़ है, रात के वक़्त कभी दौलत कदे से बाहर तशरीफ़ न लाते, ख़्वाह ख़लीफ़ा ही मुलाक़ात के लिये क्यूं न ह़ाज़िर होता ! रोज़े निहायत कसरत से रखते थे बा'ज़ अवक़ात दरख़्तों के पत्तों, जंगली बूटियों और गिरी पड़ी मुबाह़ चीज़ों से रोज़ा इफ़्तार फ़रमाते। ग़रज़ **क़ाइमुल लैल और साइमुन्नहार** रहना (या'नी रात को बेदार रहना और दिन को रोज़े रखना) आप की आ़दत बन चुकी थी।

वाक़ेई मह़ब्बते इलाही जिस की रग रग में समा चुकी हो और उस के दिल में मह़ब्बत का समन्दर जोश मार रहा हो उसे भला नींद कैसे आ सकती है ? जब ग़ाफ़िल दुन्या नींद के मज़े ले रही होती है उस वक़्त ख़ुदा से मह़ब्बत रखने वाले क़ियाम, रुकूअ़ और सुजूद के ज़रीए अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करते और उस का क़ुर्ब ह़ासिल करते हैं।

www.dawateislami.net

ऐसे ही नेक लोगों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ طَمَعًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते।* (پارہ21، السجدہ:16)

ऐसा ही ह़ाल हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का था कि आप अपनी रातें इबादते इलाही में गुज़ारा करते थे। शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अबिल फ़त्ह़ हरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में चन्द रातें सोया, आप का येह ह़ाल था कि एक तिहाई रात तक नफ़्ल पढ़ते और फिर ज़िक्र करते फिर कुछ अवराद करते रहते। मैं ने अपनी आंखों से देखा कि कभी आप का जिस्म लाग़र हो जाता, कभी फ़र्बा, किसी वक़्त मेरी निगाहों से ग़ाइब हो जाते फिर थोड़ी देर बा'द आ जाते और क़ुरआने करीम पढ़ते यहां तक कि रात का दूसरा ह़िस्सा गुज़र जाता, सजदे बहुत त़वील करते, अपने चेहरे को ज़मीन पर रगड़ते, तहज्जुद अदा फ़रमाते और मुराक़बे व मुशाहदे में तुलूए़ फ़ज्र तक बैठे रहते फिर निहायत इज्ज़ो नियाज़ और ख़ुशूअ़ से दुआ मांगते, उस वक़्त आप को ऐसा नूर ढांप लेता कि नज़रों से ग़ाइब हो जाते यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र के लिये ख़लवत कदे से बाहर निकलते।

(بہجۃ الاسرار، ص ۲۵۰، سیرت غوث اعظم، ص ۱۴۱۔ ۱۴۲، ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने! हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم सारी सारी रात इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ इबादत व रियाज़त करते और दिन में रोज़ा रखते थे। ऐ काश! हमें भी बुज़ुर्गाने दीन के सदक़े इस्तिक़ामत के साथ इबादत की सआ़दत नसीब हो जाए। उ़मूमन हम लोग कुछ अ़र्से तक इबादत व रियाज़त, क़ुरआने पाक की तिलावत, ज़िक्रो दुरूद की कसरत के साथ साथ दीगर नेक आ'माल करते रहते हैं मगर फिर शैत़ान के

www.dawateislami.net

मक्रो फरेब में मुब्तला हो कर नेकियों से दूर और गुनाहों भरी ज़िन्दगी में मश्ग़ूल हो जाते हैं। अगर हम इबादत पर इस्तिक़ामत चाहते हैं तो हर वक़्त हमें अपने मक़्सदे ह़यात को पेशे नज़र रखना होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें मुक़र्ररा वक़्त के लिये ख़ास मक़्सद के तह़्त इस दुन्या में भेजा है। इस के बा'द हमें मरना भी पड़ेगा चुनान्चे, पारह **18** सूरतुल मोअमिनून आयत नम्बर **115** में इरशाद होता है :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی इस आयते मुक़द्दसा के तह़्त फ़रमाते हैं : (क्या तुम्हें) आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं ? बल्कि तुम्हें इबादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा दें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को अपनी इबादत व मा'रिफ़त के लिये पैदा फ़रमाया है मगर अफ़्सोस ! हम ने अपने मक़्सदे ह़यात को भुला कर दुन्या ही को सब कुछ समझ लिया है और इस की मह़ब्बत में ऐसे गुम हुवे कि हुक़ूक़ुल्लाह की बजा आवरी का ज़रा एह़सास न रहा, याद रखिये ! दुन्या आख़िरत की खेती है इस में जो बोएंगे आख़िरत में बत़ौरे जज़ा वोही काटेंगे। अगर नेक आ'माल के ज़रीए इस खेती को सैराब करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में जन्नत की आ'ला ने'मतों के ह़िस्सेदार बनेंगे और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करते हुवे गुनाहों भरी ज़िन्दगी बसर की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार होंगे। लिहाज़ा हमें बक़दरे ह़ाजत और अपने बाल बच्चों की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ ही माल कमाना चाहिये और ख़ुद को दुन्या में एक मुसाफ़िर तसव्वुर करना चाहिये कि जिस त़रह़ मुसाफ़िर अपने सफ़र के लिये इन्तिहाई क़लील ज़ादे राह साथ ले कर

www.dawateislami.net

चलता है कि कहीं ज़ियादा बोझ अपने ऊपर लाद लेने की सूरत में वोह बोझ बाइसे तक्लीफ़ साबित न हो, इसी त़रह़ दुन्यावी ज़िन्दगी भी दर ह़क़ीक़त मन्ज़िले आख़िरत की त़रफ़ एक सफ़र ही तो है लिहाज़ा हमें चाहिये कि इस सफ़र में दुन्या की फ़ानी लज़्ज़तों और आसाइशों का बोझ उठाने के बजाए बक़दरे ज़रूरत पर इक्तिफ़ा करें और नेक आ'माल ज़ियादा से ज़ियादा (बत़ौरे ज़ादे राह) अपने साथ ले कर चलें।

यक़ीनन ख़ुश बख़्त हैं वोह लोग जो जन्नत की अबदी ने'मतों को पेशे नज़र रखते हुवे दुन्या की आ़रिज़ी तकालीफ़ पर सब्र करते हैं और आ'माले सालेह़ा की राह में आने वाली तमाम तर मशक़्क़तों को बरदाश्त करते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ अदा करते हैं, ऐसे ख़ुश नसीबों को मुबारक हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें कसीर इन्आ़मात व इकरामात से नवाज़ता है, हर मुसीबत से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है और सब से बढ़ कर येह कि उन्हें अपना क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमाता है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ लड़के ! मैं तुम्हें ऐसी बातें इरशाद न फ़रमाउं जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें नफ़्अ़ बख़्शे ? हुक़ूक़ुल्लाह की ह़िफ़ाज़त करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा। हुक़ूक़ुल्लाह की ह़िफ़ाज़त करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने सामने पाओगे। (या'नी तुम्हारे मुआ़मलात में उस की मदद शामिले ह़ाल होगी और तुम्हारे काम आसान होंगे (مرقاۃ، ۹/۱۶۲)) फ़राख़ी व ख़ुशह़ाली में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करो वोह सख़्ती व शिद्दत में तुम्हें याद रखेगा। जब सुवाल करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से करो और जब मदद मांगो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मांगो। क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है क़लम उसे लिख कर ख़ुश्क हो चुका है और जो चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारा मुक़द्दर नहीं फ़रमाई वोह सब लोग मिल कर भी तुम्हें नहीं दे सकते और जो शै **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारा मुक़द्दर फ़रमा दी है उसे

www.dawateislami.net

सब लोग मिल कर भी तुम से नहीं रोक सकते। लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये यक़ीन के साथ अ़मल करो और जान लो कि ना गवार चीज़ पर सब्र करना बहुत ज़ियादा भलाई का काम है और मदद सब्र करने से ह़ासिल होती है, वुस्अ़त व कुशादगी तंगी के साथ होती है और हर तंगी के बा'द आसानी है।

(مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عبّاس، ۱/۶۵۹، حدیث: ۲۸۰۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैत़ान से मुक़ाबला

पीरों के पीर, पीरे दस्तगीर, रोशन ज़मीर, क़ुत़्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, पीरे लासानी, पीरे पीरां, मीरे मीरां, अश्शैख़ अबू मुह़म्मद सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی तह़दीसे ने'मत और अहले मह़ब्बत की नसीह़त के लिये फ़रमाते हैं : मैं जिन दिनों शबो रोज़ जंगल में रहा करता था, शयात़ीन ख़ौफ़नाक शक्लों में त़रह़ त़रह़ के हथयारों से लेस हो कर फ़ौज दर फ़ौज मुझ पर ह़म्ला आवर होते, मुझ पर आग बरसाते, मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद से उन के पीछे दौड़ता तो वोह मुन्तशिर हो कर भाग जाते। कभी शैत़ान अकेला आ कर मुझे त़रह़ त़रह़ से डराता, धमकियां देता और कहता : यहां से चले जाओ, मैं उस को ज़ोरदार त़मांचा मार देता तो वोह भागने लगता, फिर मैं لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم पढ़ता तो वोह जल जाता।

(بَہْجَۃ الاسرار و معدن الانوار، ص ۱۶۵)

दिल पे कन्दा हो तेरा नाम कि वोह दुज़्दे रजीम[1]
उलटे ही पाउं फिरे देख के तुग़रा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1) धुतकारा हुवा चोर या'नी मर्दूद शैत़ान।

www.dawateislami.net

लाहौल शरीफ़ की बरक्त

मा'लूम हुवा कि لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ पढ़ना शैत़ान को भगाने का बेहतरीन नुस्ख़ा है, इस लिये जब शैत़ानी वसाविस बन्दे को घेर लें तो उसे चाहिये कि फ़ौरन لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ पढ़े, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ाने लईन का मुंह काला होगा । मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि जो कोई सुब्ह़ो शाम इक्कीस (21) बार लाहौल शरीफ़ (या'नी لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ) पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वस्वसए शैत़ानी से अम्न में रहेगा । (मिरआतुल मनाजीह़ जि. 1 स. 87)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का ख़ौफ़े ख़ुदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों का हमेशा से येह वत़ीरा रहा है कि ढेरों नेकियां करने और गुनाहों से बचने के बावुजूद वोह बे पनाह ख़ौफ़े ख़ुदा और ख़शिय्यते इलाही रखते हैं । सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी बे पनाह ख़ौफ़े ख़ुदा रखते थे चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शरफ़ुद्दीन सा'दी शीराज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی को ह़रमे का'बा में देखा गया कि कंकरियों पर सर रखे बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हैं : "ऐ ख़ुदावन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे और अगर मैं सज़ा का ह़क़दार हूं तो बरोज़े क़ियामत मुझे अन्धा उठाना ताकि नेकूकार लोगों के सामने शर्मिन्दा न होऊं ।"

(گلستانِ سعدی، ص ۵۴ انتشارات عالمگیر ایران)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये कि हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दिन रात यादे इलाही में मश्ग़ूल होने के बा'द भी येह फ़रमा रहे हैं कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर मैं तेरी बारगाह में सज़ा का हक़दार हूं तो रोज़े क़ियामत मुझे अन्धा उठाना ताकि अहले महशर के सामने शर्मिन्दा होने से बच सकूं। यक़ीनन जिन्हें सहीह मा'नों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ होता है चाहे वोह जितने भी नेक आ'माल कर लें मगर अपनी नेकियों पर भरोसा कर के फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल नहीं होते और हर वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ते कांपते रहते हैं। याद रखिये ! इस दुन्यावी ज़िन्दगी की रौनकों, मसर्रतों और इनाइयों में खो कर हिसाबे आख़िरत के मुआमले में ग़फ़्लत का शिकार हो जाना यक़ीनन नादानी है। बिला शुबा ख़ौफ़े ख़ुदा हमारी उख़रवी नजात के लिये बड़ी अहम्मिय्यत का हामिल है क्यूंकि इबादात की बजा आवरी और मन्हिय्यात (या'नी ममनूअ़ चीज़ों) से बाज़ रहने का अ़ज़ीम ज़रीआ़ ख़ौफ़े ख़ुदा है। नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : رَأْسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللهِ या'नी हिक्मत का सरचश्मा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ है।

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ۱/۴۷۰، حدیث: ۷۴۲)

हमारी नजात इसी में है कि हम रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल करते हुवे अपने लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें और गुनाहों के इर्तिकाब से परहेज़ करें। इस मक़्सदे अ़ज़ीम में सुर्ख़रूई से हमकिनार होने के लिये एक मुसलमान के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) का होना बेहद ज़रूरी है। जैसा कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह **4** सूरए आले इमरान आयत नम्बर **175** में इरशाद फ़रमाता है :

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो।*

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं क्यूंकि ईमान का मुक़्तज़ा ही येह है कि बन्दे को ख़ुदा ही का ख़ौफ़ हो ।

एक और मक़ाम पर इरशादे रब्बानी है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَ لَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (پ۴، آل عمران:۱۰۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना, मगर मुसलमान ।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ क़ुरआने करीम में ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत बयान की गई, इसी त़रह़ अह़ादीसे मुबारका में भी जा बजा ख़ौफ़े ख़ुदा की फ़ज़ीलत और इस के अह़काम बयान फ़रमाए गए हैं लिहाज़ा ख़ुद को गुनाहों से बचाने और दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा जगाने के लिये चन्द अह़ादीसे मुबारका सुनिये ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि उसे आग से निकालो जिस ने मुझे कभी याद किया हो या किसी मक़ाम में मेरा ख़ौफ़ किया हो ।''

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ۱/۴۶۹، حدیث:۷۴۰)

सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, ''जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से डरता है, हर चीज़ उस से डरती है और जो **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी से डरता है तो **अल्लाह** तआ़ला उसे हर शै से ख़ौफ़ ज़दा करता है ।

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ۱/۵۴۱، حدیث:۹۷۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा आयाते मुबारका और अह़ादीसे शरीफ़ा सुन कर ऐ काश ! हमारे दिल पर पड़ा ग़फ़्लत का पर्दा चाक हो जाए और उम्मीदे रह़मत के साथ साथ हमें सह़ीह़ मा'नों में ख़ौफ़े ख़ुदा भी नसीब हो जाए, अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ियों का हर दम धड़का लगा रहे और ऐ काश ! हम नज़्अ़ की

www.dawateislami.net

सख़्तियों, मौत की तल्ख़ियों, क़ब्र की अन्धेरियों और वह्शतों, मैदाने क़ियामत में छोटी छोटी बातों की भी पुरसिशों के ख़ौफ़ से हर वक़्त लरज़ां व तरसां रहने वाले बन जाएं।

ज़माने का डर मेरे दिल से मिटा कर
तू कर ख़ौफ़ अपना अ़ता या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़ के तीन दरजात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ख़ौफ़े ख़ुदा एक क़ल्बी कैफ़िय्यत का नाम है और येह कैफ़िय्यत हर शख़्स के दिल के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ होती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى अपनी तह़क़ीक़ की रोशनी में ख़ौफ़ के तीन दरजात बयान फ़रमाते हैं :

(1) **ज़ईफ़ (या 'नी कमज़ोर) :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की कुव्वत न रखता हो मसलन जहन्नम की सज़ाओं के ह़ालात सुन कर मह्ज़ झुर झुरी ले कर रह जाना और फिर से ग़फ़्लत व मा'सिय्यत में गिरिफ़्तार हो जाना।

(2) **मो 'तदल (या 'नी मुतवस्सित़) :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की कुव्वत रखता हो मसलन अ़ज़ाबे आख़िरत की वईदों को सुन कर इन से बचने के लिये अ़मली कोशिश करना और इस के साथ साथ रब तआ़ला से उम्मीदे रह़मत भी रखना।

(3) **क़वी (या 'नी मज़बूत़) :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को ना उम्मीदी, बेहोशी और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला कर दे। मसलन **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब वग़ैरा का सुन कर अपनी मग़फ़िरत से ना उम्मीद हो जाना।

येह भी याद रहे इन सब में बेहतर दरजा "**मो 'तदल**" है क्यूंकि ख़ौफ़ एक ऐसे ताज़ियाने की मिस्ल है जो किसी जानवर को

www.dawateislami.net

तेज़ चलाने के लिये मारा जाता है, लिहाज़ा ! अगर इस ताज़ियाने की ज़र्ब इतनी "**ज़ईफ़**" हो कि जानवर की रफ़्तार में ज़र्रा भर भी इज़ाफ़ा न हो तो इस का कोई फ़ाइदा नहीं, और अगर येह ज़र्ब इतनी "**क़वी**" हो कि जानवर इस की ताब न ला सके और इतना ज़ख़्मी हो जाए कि उस के लिये चलना ही मुमकिन न रहे तो येह भी नफ़्अ़बख़्श नहीं और अगर येह "**मो'तदल**" हो कि जानवर की रफ़्तार में भी ख़ातिर ख़्वाह इज़ाफ़ा हो जाए और वोह ज़ख़्मी भी न हो तो येह ज़र्ब बेहद मुफ़ीद है।

(احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، بیان درجات الخوف واختلافہ۔۔۔۔۔۔الخ، ۴/ ۱۹۲، ماخوذاً)

मग़लूब शहा ! नफ़्से बदकार नहीं होता	*दिल हाए गुनाहों से बेज़ार नहीं होता*
अच्छा येह गुनाहों का बीमार नहीं होता	*ऐ रब के ह़बीब आओ ऐ मेरे त़बीब आओ*
पाकीज़ा गुनाहों से किरदार नहीं होता	*गो लाख करूं कोशिश इस्लाह़ नहीं होती*

(वसाइले बख़्शिश, स. **234**)

बयान का ख़ुलासा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने सब से पहले येह सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی इतनी दिलजमई से नमाज़ अदा फ़रमाते थे कि एक जिन्न ने सांप का रूप धार कर आप की नमाज़ में ख़लल डालना चाहा मगर आप के पायए इस्तिक़लाल में ज़रा भी फ़र्क़ न आया जिस से मुतअस्सिर हो कर उस जिन्न ने आप के हाथ पर तौबा कर ली, इस के बा'द हम ने सुना कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने चालीस साल तक इ़शा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाई और पन्दरह साल तक हर रात में क़ुरआने पाक ख़त्म करते थे, येह भी सुना कि ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इ़राक़ के बयाबानों में पन्दरह साल रियाज़त और मुजाहदे के दौरान बहुत सारी मुश्किलात और मसाइब का सामना किया। इस से मा'लूम हुवा कि राहे ख़ुदा में मुश्किलें आती हैं जो कि दरजात की बुलन्दी का बाइ़स बनती हैं, इस के बा'द येह भी सुना कि ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत ही कम

www.dawateislami.net

खाना खाते, खाने से मक़्सूद लज़्ज़त नहीं बल्कि इबादत पर कुव्वत हासिल करने की निय्यत हो। हम ने येह भी जाना कि जब ग़ाफ़िल, नींद के मज़े ले रहे होते हैं, उस वक़्त ख़ुदा से महब्बत रखने वाले क़ियाम, रुकूअ़ और सुजूद के ज़रीए अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करते और उस का क़ुर्ब हासिल करते हैं, जैसा कि हुज़ूर सय्यिदी ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का हाल था, इस के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ सुना और ज़िमनन ख़ौफ़े ख़ुदा के बारे में क़ुरआने पाक की आयात और अह़ादीसे मुबारका भी सुनीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें बुज़ुर्गाने दीन की सीरत पर अ़मल करते हुवे ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन की सीरत पर अ़मल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से नेक लोगों जैसी सिफ़ात पैदा हो जाएंगी।

मजलिसे मदनी इन्आ़मात का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ख़्वाहिशात के ऐ़न मुत़ाबिक़ इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों और जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना के त़लबा व त़ालिबात को बा अ़मल बनाने के लिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब दिलाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त मजलिसे मदनी इन्आ़मात का क़ियाम अ़मल में आया, चुनान्चे,

मजलिसे मदनी इन्आ़मात के तमाम ज़िम्मेदारान को ताकीद की जाती है कि ज़ैली ह़ल्क़ा, ह़ल्क़ा, अ़लाक़ा, डिवीज़न और काबीना सत़्ह़ के तमाम ज़िम्मेदारान व दीगर इस्लामी भाइयों के हमराह ज़ैली ह़ल्क़ों का जदवल बनाएं। इस्लामी भाइयों के पास जा जा कर

www.dawateislami.net

इनफ़िरादी कोशिश कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला पेश करते हुवे, इस पर अ़मल करने का ज़ेहन बनाएं, फ़िक्रे मदीना करने का त़रीक़ा समझाएं, तय्यार हो जाने वालों के नाम लिखें, ज़ैली ज़िम्मेदार के पास ज़ैली, ह़ल्क़ा ज़िम्मेदार के पास ह़ल्क़ा और अ़लाक़ा / शहर ज़िम्मेदार के पास अ़लाक़ा / शहर के (ज़िम्मेदारान व अहले मह़ब्बत) इस्लामी भाइयों की फ़ेहरिस्त मौजूद हो, येह तमाम ज़िम्मेदारान, उन इस्लामी भाइयों से राबित़ा रखें फिर उन्हें फ़िक्रे मदीना करने की याद दहानी भी करवाते रहें।

आइये हम भी नेकी के कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लें और मदनी इन्आ़मात पर न सिर्फ़ ख़ुद अ़मल करें बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को इस की तरग़ीब दिला कर ढेरों सवाब कमाएं !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बारह मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियां करने गुनाहों से बचने और नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के **12** मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के बारह मदनी कामों में से एक मदनी काम अपने आ'माल का मुह़ासबा करते हुवे मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करना भी है। हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी न सिर्फ़ ख़ुद फ़िक्रे आख़िरत में अपने आ'माल का मुह़ासबा करते बल्कि लोगों को भी इस का ज़ेहन दिया करते जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "ऐ लोगो ! अपने आ'माल का ह़िसाब कर लो, इस से पहले कि क़ियामत आ जाए और तुम से इन का ह़िसाब लिया जाए। (حلیۃ الاولیاء، ج۱، ص۵۶)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में फ़िक्रे आख़िरत का ज़ेहन बनाने, नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल मदनी इन्आ़मात ब सूरते

www.dawateislami.net

सुवालात अ़ता फ़रमाए हैं। इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और जामिआ़त के त़लबा के लिये **92**, त़ालिबात के लिये **83**, और मद्रसतुल मदीना के मदनी मुन्नों के लिये **40** मदनी इन्आ़मात हैं, इसी त़रह़ ख़ुसूसी या'नी गूंगे बहरे और नाबीना इस्लामी भाइयों और क़ैदियों के लिये भी मदनी इन्आ़मात मुरत्तब फ़रमाए हैं। मदनी इन्आ़मात के रसाइल **मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब किये जा सकते हैं, इन का बग़ौर मुत़ालआ़ करने के बा'द आप इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि येह दर अस्ल ख़ुद इह़तिसाबी का एक जामेअ़ निज़ाम है जिस को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से आहिस्ता आहिस्ता दूर हो जाती हैं और इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता है। आइये मदनी इन्आ़मात के रिसाले की एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

मदनी इन्आ़मात के रिसाले की बरकत

न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : हमारे अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हैं, उन्हों ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मेरे बड़े भाईजान को मदनी इन्आ़मात का एक रिसाला तोह़फ़े में दिया, वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसलमान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बरदस्त फ़ॉरमूला दे दिया गया है ! मदनी इन्आ़मात का रिसाला मिलने की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन को नमाज़ का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के नमाज़ी बन चुके हैं, दाढ़ी मुबारक भी सजा ली और मदनी इन्आ़मात का रिसाला भी पुर करते हैं।

www.dawateislami.net

मदनी इन्आमात के आमिल पे हर दम हर घड़ी
या इलाही ख़ूब बरसा रहमतों की तू झड़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، ج ا ص ۵۵ حدیث ۱۷۵ دار الکتب العلمیہ بیروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"101 मदनी फूल"** से सलाम से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल सुनते हैं।

मदनी फूल

﴾1﴿ मुसलमान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना सुन्नत है। ﴾2﴿ **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ बहारे शरीअ़त हिस्सा. 16, सफ़ह़ा. 102 पर लिखे हुए जुज़इये का ख़ुलासा है : "सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूं उस का माल और इ़ज़्ज़त व आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना **ह़राम** जानता हूं।" ﴾3﴿ दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसलमानों को सलाम करना कारे सवाब है। ﴾4﴿ सलाम में पहल करना **सुन्नत** है। ﴾5﴿ सलाम में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है। ﴾6﴿ सलाम में पहल करने वाला **तकब्बुर** से भी बरी है। जैसा कि मेरे मक्की मदनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले सलाम कहने

वाला तकब्बुर से बरी है। (شُعَبُ الایمان ج٦ ص ٤٣٣) ﴿7﴾ सलाम में पहल करने वाले पर **90** रह़मतें और जवाब देने वाले पर **10** रह़मतें नाज़िल होती हैं। (कीमियाए सआ़दत) ﴿8﴾ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहने से **10** नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحْمَةُ اللّٰه भी कहेंगे तो **20** नेकियां हो जाएंगी। और وَبَرَكَاتُهٗ शामिल करेंगे तो **30** नेकियां हो जाएंगी। **बा'ज़ लोग** सलाम के साथ **जन्नतुल मक़ाम** और **दोज़ख़ुल ह़राम** के अल्फ़ाज़ बढ़ा देते हैं येह ग़लत़ त़रीक़ा है। बल्कि मन चले तो مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ यहां तक बक जाते हैं : **आप के बच्चे हमारे ग़ुलाम**। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द **22** सफ़ह़ा **409** पर फ़रमाते हैं : कम अज़ कम اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ और इस से बेहतर وَرَحْمَةُ اللّٰه मिलाना और सब से बेहतर وَبَرَكَاتُهٗ शामिल करना और इस पर ज़ियादत नहीं। फिर सलाम करने वाले ने जितने अल्फ़ाज़ में सलाम किया है जवाब में उतने का इआ़दा तो ज़रूर है और अफ़्ज़ल येह है कि जवाब में ज़ियादा कहे। उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَام وَرَحْمَةُ اللّٰه कहे। और अगर उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰه कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहे और अगर उस ने وَبَرَكَاتُهٗ तक कहा तो येह भी इतना ही कहे कि इस से ज़ियादत नहीं। ﴿9﴾ واللّٰه تعالٰی اعلم इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ कह कर **30** नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं। ﴿10﴾ सलाम का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले। ﴿11﴾ सलाम और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये।

पहले मैं कहता हूं आप सुन कर दोहराइये

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ (اَسْ. سَلامُ. عَلَيْ. كُمْ)

अब पहले मैं जवाब सुनाता हूं फिर आप इस को दोहराइये

وَعَلَيْكُمُ السَّلَام (وَ. عَ. لَيْ. كُمْ. سَلام)

www.dawateislami.net

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यत ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। **सुन्नतों** की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

(1) शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

(2) तमाम गुनाह मुआ़फ़ : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (ایضاً ص ٦٥)

www.dawateislami.net

(3) रह़मत के सत्तर दरवाज़े :

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ۱۰ ص ۲۵٤ حدیث ۱۷۳۰۵)

(5) छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मदे सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ۱٤۹)

(6) क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد